एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सोयाबीन की उन्नत खेती

(*रामस्वरूप जाट[1] एवं बाबू लाल चौधरी[2])
[1]राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविधालय, ग्वालियर, (म.प्र.)
[2]कृषि अनुसंधान अधिकारी, कृषि विभाग, डेगाना, नागौर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rschandiwal@gmail.com

सोयाबीन खरीफ की एक महत्वपूर्ण तिलहनी एवं दलहनी फसल है। विभिन्न किस्मों के अनुसार इसके दानों में तेल की मात्रा 18–22 प्रतिशत तक उपस्थित होती है। इसके दानों में प्रोटीन की मात्रा लगभग 38–42 प्रतिशत तक होती है। सोयाबीन में प्रचुर मात्रा में वसा एवं विटामिन पाई जाती है।

1) खेत का चुनाव : भूमि का पी.एच. मान 7 के आस–पास होना चाहिए अर्थात् मिट्टी न तो क्षारीय हो न अम्लीय। दोमट गहरी मिट्टी अच्छी फसल हेतु बहुत उपयुक्त होगी।

2) खेत की तैयारी : रबी फसल की कटाई के बाद मोल्ड बोर्ड प्लाऊ से खेत की 6–8 इंच गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ देने से कीट, बीमारी एवं खरपतवार कम लगते है। एवं जून के पहले हफ्ते में दो–तीन हेरो या कल्टीवेटर को विपरीत दिशाओं में चलाकर ढेले फोड़ कर खेत को समतल कर लेना चाहिए।

3) बोने का समय: अच्छी उपज के लिए बोने का उपयुक्त समय 20 जून से 30 जून का पाया गया है।

4) खाद एवं बोने से पहले उपयोग के लिए रसायन : अच्छी उपज के लिए गोबर की खाद (10–15 गाड़ी प्रति है.)। मोटे तौर पर नत्रजन : फास्फोरस : पोटाश : गंधक को 20 : 80 : 20 : 20 किग्रा. प्रति हैक्टेयर के अनुपात में देना चाहिए। फोरेट 10 जी. 10 किग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में बोने से पहले डालकर कल्टीवेटर द्वारा मिला दें।

5) उत्तम किस्मो का चुनाव : जे.एस.–335, एन.आर.सी.–12, एन.आर.सी.–7, एन.आर.सी.–37, एन.आर.सी.–37, एन.आर.सी.–2, मेक्स–58, पूसा–16, जे.एस.–71–05, जे.एस.–80–21, पी.के.–416, पी.के.–472, पी.के.–1042, पी.के.–1029, जे.एस. 93–05, जे.एस. 95–60, जे.एस.–9091, प्रताप सोया–1, प्रताप सोया–2.

6) उपयुक्त पौध संख्या : खेत में 4 से 6 लाख स्वस्थ पौधे प्रति हैक्टेयर हों, अर्थात एक मीटर कतार में 20 स्वस्थ पौधे हों।

7) बीज का उपचार : बीज को थायरम एवं बाविस्टीन (2:3) 3 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करना अति आवश्यक है। बोने के ठीक पहले बीज को प्रभावकारी राइजोबियम (10 ग्राम) एवं

पी.एस.बी. (10 ग्राम) कल्चरसे प्रति किग्रा. बीज (लगभग 800 ग्राम प्रति कल्चर प्रति हैक्टेयर) की दर से पानी का छींटा लगा कर बीज में मिला दें।

8) बीज की दर : 70 किग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज से साधारणतया अच्छे परिणाम मिलते है। पछेती बुआई में बीज की मात्रा 100 किग्रा. प्रति हैक्टेयर रखें।

9) बोने की गहराई एवं कतार से कतार की दूरी : बीज को 3 से.मी. गहराई में बोने से अंकुरण अच्छा होता है। कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. तथा बीज से बीज की दूरी लगभग 5–6 से.मी. होनी चाहिये।

10) खरपतवार नियंत्रण : जब खरपतवार दो या तीन इंच के हों अथवा 2–3 पत्ती की अवस्था में हों तब खेत में नमी रहने पर 720 मि.लि. परस्यूट, 1.5 कि.ग्रा. सायबूस्ट, 1 कि.ग्रा. सायस्प्रेड, 700 ली. पानी में घोल बनाकर 1 हैक्टेयर खेत में छिड़कने से लगभग सभी खरपतवार मर जाते हैं तथा 40–45 दिन तक नए खरपतवार नहीं पनपते। या बोने से पहले बासालीन या ट्रैफ्लान 2 किग्रा. 700 लि. पानी में घोल बना कर छिड़क कर मिट्टी में मिलाने से या बोने के तुरंत बाद स्टाम्प 3.5 लि. या डुअल 2 लि. आदि छिड़कने से भी खरपतवार का संतोषजनक नियंत्रण किया जा सकता है।

11) सिंचाई : फसल को पुष्पन तथा फली में दाना पड़ने की अवस्था में पानी की कमी अर्थात् सूखे से जरूर बचाना चाहिये।

12) बिमारी एवं कीट नियंत्रण :

तम्बाकू की इल्ली, कम्बल इल्ली या अन्य इल्ली : इनकी प्रारंभिक अवस्था से ग्रसित पौधों को निकाल दें। फसल पर एक – दो छिड़काव ट्रायएझोफास 40 ई.सी. (0.8 ली./है.) या क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. (1.5 ली./है.) या क्विनालफॉस 25 ई.सी. (1.5 ली./है.) 750 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव स्प्रे करने से मुख्य कीट का नियंत्रण हो जाता है।

गेरूआ रोग (सोयाबीन रस्ट) की रोकथाम : रोग के शुरूआत की अवस्था में ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें व फसल पर हेक्जाकोनाझोल (कन्टाफ) या प्रोपीकोनाजाल (टिल्ट) 800 मि.ली. या ट्राइडिमेफोन (बेलेटॉन) 800 ग्राम दवा का 800 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हैक्टेयर में भली प्रकार छिड़काव करें। रोग की अधिकता पर दूसरा छिड़काव 15 दिनों के बाद पुनः करें।

अफलन समस्या की रोकथाम : ऐसे खेतो में जहाँ अफलन रोग हर साल उग्र रूप में आता है संभावित रोगकारक कीटों की रोकथाम के लिए क्लोरपाइरीफॉस 1.5 लीटर या ट्राइजोफॉस 800 मि.ली. या मिथोमिल 2 लीटर या इथियॉन 1.5 लीटर या क्युनॉलफॉस 1.5 लीटर प्रति हैक्टेयर के हिसाब से दो छिड़काव करें, पहला बुवाई के 18 से 20 दिन बाद व दूसरा 28 से 30 दिन बाद।